हिंदी प्रसून-8

1. जो बीत गई सो बात गई

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iii) (ख) (iv) (ग) (i)

2. (क) **भाव**—इन पंक्तियों के माध्यम से कवि कहता है कि जो बिछुड़ जाते हैं वे दोबारा नहीं मिलते। इस बात को लेकर हमें शोक नहीं करना चाहिए। इसके लिए कवि अम्बर का उदाहरण प्रस्तुत करता है कि तारों के टूटने पर क्या वह दुखी होता है। अत: शोक न करके हमें पुन: एक नए संकल्प के साथ जीवन जीना चाहिए।

(ख) **भाव**—कवि कहता है कि जो कलियाँ मुरझा जाती हैं वे दोबारा नहीं खिलतीं, किंतु क्या उन सूखे हुए पुष्पों को लेकर उपवन दुख प्रकट करता है अर्थात् नहीं। इसलिए उपवन का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कवि हमें यह संदेश देता है कि हमें मुसीबत के समय घबराना नहीं चाहिए और बीती बातों को भुलाकर आगे बढ़ जाना चाहिए, क्योंकि जो बीत गई सो बात गई।

3. (क) कवि बीती बातों को भुलाने को इसलिए कह रहा है, क्योंकि बीता हुआ समय लौटकर नहीं आता इसलिए उसके पछतावे में आने वाले कल को खराब नहीं करना चाहिए।

(ख) मधुबन पर ये दुख आते हैं कि उनकी कलियाँ मुरझा जाती हैं और लताएँ सूख जाती हैं।

(ग) कवि के जीवन में बहुत प्रिय वस्तु शायद उनकी पत्नी थी जिसे उन्होंने यहाँ एक सितारा कहकर संबोधित किया है।

(घ) अंबर शोक इसलिए नहीं मनाता है, क्योंकि जो बीत चुका है वह वापस नहीं आ सकता। अत: पछतावा करने से क्या फायदा है।

(ङ) कवि ने अंबर से जीवन में कष्ट आने तथा अपनों के बिछुड़ जाने पर शोक न करने की सीख लेने को कहा है

(च) मधुबन हमें मुसीबत के आने पर हताश न होने का संदेश देता है।

(छ) मेरे अनुसार, कविता का यह शीर्षक बिलकुल उचित है, क्योंकि कविता का सारांश और उसका भाव बीती बातों को भूल जाना ही है। इसलिए कविता का शीर्षक 'जो बीत गई सो बात गई' उपयुक्त है।

❒ व्याकरण-बोध

4. बेपरवाह बेमिसाल बेदर्द बेहिचक बेशर्म

5. (i) **मधुबन शोर** नहीं मचाता है। (कर्त्ता)
   (ii) बीती **बात को** भूल जाना चाहिए। (कर्म)
   (iii) तुम्हारे **जीवन में** एक बेहद प्यारा पुष्प खिला था। (अधिकरण)
   (iv) **अंबर के** आँगन को देखो, कितने तारे टूटे हैं। (संबंध)

6.

अंबर	— गगन	नभ	शून्य
मधुबन	— उपवन	बाग	बगिया
कुसुम	— सुमन	फूल	पुष्प
शोक	— कष्ट	पीड़ा	दुख

7.

	विशेषण	**विशेष्य**
शोक	— शोकाकुल	मन
मुरझा	— मुरझाई	कली
बीत	— बीती	बात
सूख	— सूखी	बगिया

8. (i) व्यक्ति के जीवन में जो पल बीत चुके हैं सो वापस नहीं आ सकते।
   (ii) जो होता है सो अच्छा होता है और जो होने वाला है वह भी अच्छा ही होगा।

❒ योग्यता-विस्तार

9. विद्यार्थी स्वयं करें।
10. विद्यार्थी स्वयं करें।
11. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

12. विद्यार्थी स्वयं करें। ❑

2. कामचोर

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iii) (ख) (ii) (ग) (iv) (घ) (i)
2. (क) भैंस चौकन्नी होकर चारपाई लेकर भागी।
   (ख) शायद कोई सपना देख रहे हैं।
   (ग)

दूध	— पय	दुग्ध	गोरस
पैर	— पाँव	चरण	पद

3. (क) अपना काम खुद करने की आदत डालने के कारण नौकरों को निकाल देने का फैसला लिया गया।
   (ख) दरी की सफाई करने के लिए उसे चारों कोनों से पकड़कर झटकना शुरू किया गया और फिर उसे लकड़ियों से पीटा गया। नतीजा यह रहा कि धूल के कारण खाँसते-खाँसते सबका बुरा हाल हो गया।

(ग) बच्चों द्वारा किए जाने लायक जो काम बताए गए; वे हैं—मैली दरी, आँगन का कूड़ा तथा पेड़ों को पानी देना।

(घ) भेड़ें दानों का सूप देखकर जो सब-की-सब झपटीं तो भागकर जाना कठिन हो गया। लश्टम-पश्टम तख्तों पर चढ़ गईं, पर भेड़ चाल मशहूर है। उनकी नजर तो बस दानों के सूप पर जमी हुई थी। पलंगों को फलाँगती, बरतन लुढ़काती साथ-साथ चढ़ गईं। साथ ही भेड़ें निस्संकोच कपड़ों को रौंदती हुई मेंगनों का छिड़काव करती हुई दौड़ गईं।

(ङ) जमीन पर पानी छिड़कने पर चारों तरफ कीचड़ ही कीचड़ हो गया, क्योंकि सारी धूल पानी पड़ते ही कीचड़ में बदल गई।

(च) बछड़ा खोल देने का यह परिणाम रहा कि उसे देखते ही भैंस रुक गई।

(छ) विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ व्याकरण-बोध

4. (क) पकड़ने, दौड़ी (संयुक्त क्रिया)

(ख) देते हैं। (द्विकर्मक क्रिया)

(ग) पढ़ाते हैं। (सकर्मक क्रिया)

(घ) रो पड़ा। (संयुक्त क्रिया)

(ङ) कॉफी पिलाई (द्विकर्मक क्रिया)

(च) जागती रहीं। (अकर्मक क्रिया)

(छ) धुन ढाला (द्विकर्मक क्रिया)

5. (क) तुम तो निरे समझदार हो।

(ख) तुमने पुरस्कार योग्य कार्य किया है।

(ग) सदाचारी को पराजय नहीं मिलती।

(घ) ज्ञान से प्रभु प्रत्यक्ष रहता है।

(ङ) रम्भा नरक की अप्सरा नहीं थी।

(च) सर्दी में बाहर मत जाओ।

6.

साँठ — गाँठ	ऐरा — गैरा	हट्टा — कट्टा
खुसर — पुसर	चूँ — चपड़	अनाप — शनाप
ऊट — पटाँग	अड़गम — बगड़गम	लप्पड़ — थप्पड़

❐ योग्यता-विस्तार

7. विद्यार्थी स्वयं करें।

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें। ❐

3. पेड़-पौधे और हम

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iii) (ख) (ii) (ग) (iii)

2. (क) पौराणिक ग्रंथों में प्रकृति के विभिन्न तत्त्वों की पूजा का वर्णन मिलता है।

(ख) हमारे देश में तुलसी, बरगद, पीपल आदि वृक्षों की पूजा की जाती है।

(ग) वृक्षों के प्रति आदर-भाव रखने का मूल कारण यह था कि अति प्राचीनकाल में ही भारतीय ऋषि-मुनियों ने इस तथ्य को जान लिया था कि वृक्षों के अभाव में मानव-अस्तित्व की कल्पना तक नहीं की जा सकती।

3. (क) मौसम-चक्र में परिवर्तन के प्रमुख कारण बढ़ती जनसंख्या एवं जंगलों की बेरहमी से कटाई है।

(ख) आयुर्वेदाचार्यों ने विभिन्न वृक्षों, पौधों, जड़ी-बूटियों के गुणों और विशेषताओं का अध्ययन किया तथा अनेक ग्रंथ लिखे। एक वर्णन के अनुसार, प्रसिद्ध वैद्यराजजीवक अपने आचार्य के आदेश पर ऐसी वनस्पति की खोज पर निकले जिसमें कोई औषधीय गुण न हो, किंतु असफल रहे। आचार्य ने कहा, वत्स, ऐसी कोई वनस्पति है ही नहीं जिसमें कोई गुण नहीं हो अर्थात् सभी में कोई-न-कोई गुण अवश्य होता है। इस प्रकार उन्होंने पेड़-पौधों और जड़ी-बूटियों के महत्त्व को सिद्ध किया।

(ग) तुलसी, नीम आदि वृक्षों की आराधना करना, देवालयों में बरगद, पीपल, बेल, आम आदि के वृक्ष लगाए जाना तथा धार्मिक अनुष्ठानों के लिए आम, अशोक, केले आदि का उपयोग करना। इस प्रकार के संबंधों द्वारा मनुष्य पूरी तरह प्रकृति पर आश्रित रहा है।

(घ) मौसम-चक्र में परिवर्तन के जो दुष्परिणाम दिखाई देते हैं वे हैं—बेमौसम बारिश का होना, बाढ़ आना, भूकंप, साँस लेने के लिए शुद्ध वायु का अभाव तथा विभिन्न प्रकार की बीमारियों का फैलना।

(ङ) इंग्लैण्ड में 'मे-डे' और इजराइल में 'तू बी शिवेत' वृक्षारोपण से संबंधित पर्व मनाए जाते हैं।

(च) बढ़ती हुई आबादी और आधुनिक जीवन की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जनसंख्या-वृद्धि जंगलों के विनाश का कारण बन रही है।

(छ) हमारे पौराणिक ग्रंथों में प्रकृति के विभिन्न तत्त्वों की पूजा की जाती थी। हमारे देश में तुलसी, बरगद, पीपल की आराधना आज भी की जाती है; जिससे सिद्ध होता है कि भारतीय संस्कृति में वृक्षों का बड़ा महत्त्व था।

(ज) आधुनिक विज्ञान की देन प्लास्टिक से प्रकृति को भयंकर खतरा उत्पन्न हो रहा है। प्लास्टिक की थैलियाँ, बोतलें वर्षों तक मिट्टी में ज्यों की त्यों पड़ी रहती हैं।

ऐसा कचरा पेड़-पौधों के लिए हानिकारक होता है। इससे धीरे-धीरे मिट्टी की उर्वरा शक्ति नष्ट हो जाती है। जिस कारण वनस्पति-जगत तथा पशु-पक्षियों का जीवन खतरे में पड़ गया है।

❒ व्याकरण-बोध

4.

वातावरण	= वात + आवरण	देवालय	= देव + आलय
परंपरागत	= परंपरा + आगत	हिमालय	= हिम + आलय
कीटाणु	= कीट + अणु	पर्यावरण	= परि + आवरण
संरक्षण	= सम् + रक्षण	प्रत्येक	= प्रति + एक
वृक्षारोपण	= वृक्ष + आरोपण	संतोष	= सम् + तोष

5.

वृक्ष	— पेड़, तरु	धरती	— पृथ्वी, भूमि
जंगल	— विपिन, वन	मित्र	— साथी, सखा

6. आपदा —बाढ़ एक प्राकृतिक आपदा है।
विपदा —विपदा की घड़ी में भी रमेश मेरे साथ रहा।
उपेक्षा —हमें निर्धनों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।
अपेक्षा —तुम्हें अपने भाई से ज्यादा अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए।
तृप्ति —वह अपनी आत्मिक तृप्ति के लिए मंदिर जाता है।
संतोष —संतोष का फल सदैव मीठा होता है।
निश्चय —मैंने निश्चय कर लिया है कि अब मन लगाकर पढ़ाई करूँगा।
निर्णय —हमारे सैनिकों ने शत्रु सेना पर आक्रमण करने का निर्णय लिया।
अस्त्र —राम ने ब्रह्मास्त्र नामक अस्त्र से रावण का वध किया था।
शस्त्र —नकुल और सहदेव ने युद्ध के लिए तलवार नामक शस्त्र को चुना।

7. (क) प्रकृति के विनाश के लिए केवल मनुष्य जिम्मेदार है।
(ख) हरे-भरे जंगल और चहचहाते पक्षी आजकल दिखाई नहीं देते हैं।
(ग) क्या पेड़-पौधे भी वातावरण को साफ करते हैं।
(घ) अरे! हमने अपनी जिम्मेदारियों से ही मुँह मोड़ लिया है।
(ङ) तुम पढ़ाई करो!
(च) भगवान तुम्हें सफल करें!
(छ) हो सकता है, आज शाम तक वर्षा हो।
(ज) यदि परिश्रम करते रहोगे तो सफलता अवश्य मिलेगी।

8. (क) बढ़ती जनसंख्या ने तरह-तरह का प्रदूषण **फैलाया।** (सकर्मक क्रिया)
(ख) पशु-पक्षी सघन वनों में निडर **होकर रहते हैं**। (सकर्मक क्रिया)
(ग) पेड़-पौधों से विहीन धरती पर क्या हम चैन से **सो पाएँगे?** (सकर्मक क्रिया)
(घ) हमें वृक्षारोपण में **बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए।** (सकर्मक क्रिया)
(ङ) वृक्ष हमें जीवन **देते हैं।** (सकर्मक क्रिया)

❐ योग्यता-विस्तार

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

11. विद्यार्थी स्वयं करें। ❐

4. भोजन और स्वास्थ्य

❐ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (iv)

2. (क) शांति से, (ख) घर का

(ग) हानिकारक (ङ) स्वास्थ्यवर्धक।

3. (क) भोजन का जीवन से सीधा संबंध है। भोजन के बिना जीवन नहीं चल सकता। भोजन है तो जीवन है और जीवन है तो संसार है। अत: हम कह सकते हैं कि भोजन ही संसार का आधार है।

(ख) भोजन करने से पूर्व हाथ धोना और परमात्मा का स्मरण करना चाहिए।

(ग) साप्ताहिक या मासिक व्रत रखने से पाचन-क्रिया में सुधार होता है।

(घ) कम मात्रा में भोजन करने से शरीर हल्का-फुल्का इसलिए रहता है, क्योंकि भोजन आसानी से पच जाता है और मन प्रफुल्ल रहता है।

(ङ) बाजार के भोजन को विष इसलिए माना गया है, क्योंकि बाजार के भोजन में स्वच्छता और शुद्धता बिल्कुल नहीं रहती जिससे अनेक बीमारियाँ शरीर में घर कर लेती हैं।

❐ व्याकरण-बोध

4. अधिक, हरी

कामचोर, स्वस्थ

5. हितकारी — कम भोजन करना स्वास्थ्य के लिए हितकारी है।

आधार — परिश्रम सफलता का आधार है।

सुपाच्य — हल्का भोजन सुपाच्य होता है।

नियंत्रण — अपने मन को नियंत्रण में रखना चाहिए।

सहज — किसी को मित्र बनाना सहज है, किंतु मित्रता निभाना कठिन है।

6. एक के सौ बनाना — राहुल ने अपने दोस्त मोहन से कहा कि एक के सौ बनाने के चक्कर में गलत काम मत करो।

चोली-दामन का साथ होना — हमेशा अच्छे लोगों का अनुसरण करना चाहिए, क्योंकि बुरी संगति और व्यसन का चोली-दामन का साथ है।

पेट पर अत्याचार करना — राम ने अपने दोस्त भुक्खड़ सोनू से कहा कि कम भोजन करो, पेट पर अत्याचार करना बुरी बात है।

शिकार होना — जो लोग स्वास्थ्य की ओर ध्यान नहीं देते वे एक-न-एक दिन बीमारी का शिकार हो जाते हैं।

❐ योग्यता-विस्तार

7. हितकारी भोजन वह होता है जो खूब लगने पर रूचि से किया जाए और जो अच्छी तरह पच जाए ताकि शरीर में रक्त-निर्माण और रक्त-संचार का नाम सुगम हो।

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें। ❐

5. वंदन है

❐ पाठ-बोध

1. (क) (iii) (ख) (iv) (ग) (ii)

2. **भाव**—इन पंक्तियों के माध्यम से कवि ने अपनी मातृभूमि के प्रति अपने कर्त्तव्यपूर्ण भावों को व्यक्त किया है और कहा है कि मुझे मेरी मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है। मैं अपने माथे पर रोली का नहीं, मातृभूमि की मिट्टी का तिलक लगाता हूँ। संपूर्ण संसार में सभी से मेरा नाता है, मुझे सभी प्रिय हैं किंतु मुझे अपनी मातृभूमि के नाते पर गर्व है अर्थात् मैं अपनी मातृभूमि पर गर्व करता हूँ।

3. (क) प्यार (ख) अन्याय (ग) मातृभूमि (घ) गर्व

4. (क) धरती हमारे द्वारा दिए गए सारे कष्टों को सहन करती है।

(ख) पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, कल्पवृक्ष की यह विशेषता है कि इसके पास रहने से व्यक्ति के संपूर्ण कष्टों का निदान हो जाता है तथा वह कभी भी बूढ़ा नहीं होता और उसकी सारी अभिलाषाएँ पूरी हो जाती हैं।

(ग) स्वर्गलोक की सुषमा मातृभूमि के सम्मुख हारी है, क्योंकि वे सारी चीजें, सारी खुशियाँ जिनका स्वर्ग में भी मिलना दुर्लभ है, मातृभूमि से मिली हैं।

(घ) भारत का भव्य मुकुट हिमालय (हिमगिरि) को कहा गया है।

(ङ) भारत का सिंहासन सिंधु को कहा गया है।

❐ व्याकरण-बोध

5. मातृभूमि — मैं अपनी मातृभूमि पर गर्व करता हूँ।

सिंहासन — राम के वन जाते ही अयोध्या का सिंहासन सूना हो गया।

अभिलाषा	— मुझे देश-सेवा के लिए सैनिक बनने की अभिलाषा है।		
सुरक्षित	— अपनी पुस्तकें अपने बस्ते में सुरक्षित रखिए।		
6. शिशु	— शैशव	बड़ा	— बड़ाई
सुंदर	— सुंदरता	वीर	— वीरता
बच्चा	— बचपन	अपना	— अपनत्व
7. आसमान	— नभ,	गगन,	आकाश
वृक्ष	— तरु,	पेड़,	विटप
वन	— जंगल,	कानन,	विपिन
सिंह	— शेर,	केसरी,	हरि

❒ योग्यता-विस्तार

8. हैं दुनिया में देश बहुत संदर, लेकिन मेरी मातृभूमि की शोभा प्यारी है; स्वर्गलोक की सुषमा-सुंदरता-गरिमा एक-एक कर इसके सम्मुख हारी है। हम सब की आशाओं, अभिलाषाओं की कल्पलता वह, कल्पवृक्ष, नंदन वन है।।

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

12. विद्यार्थी स्वयं करें।

13. विद्यार्थी स्वयं करें।

14. विद्यार्थी स्वयं करें। ❑

6. जल है तो कल है

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (i)

2. (क) **भाव**—इस पंक्ति का भाव है कि जल ही जीवन का आधार है। बिना जल के कुछ भी संभव नहीं है।

(ख) **भाव**—भवन-निर्माण के समय में ही वर्षा के जल को संरक्षित करने की योजना को शामिल कर लेना चाहिए। ऐसा करना भवन-निर्माण के बाद की योजना से काफी सस्ता होता है अर्थात् किसी कार्य को करने से पूर्व विचार कर लेना हितकारी होता है।

3. (क) समुद्र का जल लवणयुक्त होने के कारण खारा होता है।

(ख) इमारत की मूल योजना में ही वर्षाजल संचयन की प्रणाली को शामिल करना इसलिए अच्छा है क्योंकि ऐसा करना इमारत के बनने के बाद स्थापित करने की अपेक्षा अधिक किफायती साबित होता है।

(ग) चैक डैमों के पीछे जमा हुआ वर्षा जल धीरे-धीरे भूमि के नीचे रिसता जाता है और चारों ओर के इलाके में जल-स्तर को ऊपर उठाता है।

(घ) वर्षाजल संरक्षण की अवधारणा है—वर्षाजल को विकेन्द्रीकृत रूप में संचित करना।

(ङ) कुछ निम्नलिखित उपयुक्त कदम उठाकर जल प्रदूषण से बचा जा सकता है—

(i) कारखानों के अवशिष्ट पदार्थों के निष्पादन की समुचित व्यवस्था होने के बावजूद इन्हें निष्पादन से पूर्व दोषरहित किया जाना चाहिए।

(ii) जलस्रोतों में अवशिष्ट बहाने को गैर-कानूनी घोषित कर प्रभावी कानूनी कदम उठाने चाहिए।

(iii) पानी में जीवाणुओं को नष्ट करने के लिए रासायनिक पदार्थों; जैसे—ब्लीचिंग पाउडर आदि का प्रयोग करना चाहिए।

(iv) समुद्रों में किए जा रहे परमाणु परीक्षणों पर रोक लगानी चाहिए।

(च) जल संरक्षण के लिए हम निम्नलिखित प्रकार योगदान दे सकते हैं—

(i) यह जाँच करें कि हमारे घर में पानी का रिसाव न हो।

(ii) पानी के नलों को इस्तेमाल करने के बाद, तुरंत बंद कर दें तथा आवश्यकता होने पर ही खोलें।

(iii) नहाने के लिए अधिक जल को व्यर्थ न करें।

(iv) खाद्य सामग्री तथा कपड़ों को धोते समय नलों को खुला न छोड़ें।

(v) जल को कदापि नाली में नहीं बहाएँ बल्कि इसे अन्य उपयोगों; जैसे—पौधों अथवा बगीचे को सींचने अथवा सफाई इत्यादि में लगाएँ।

(vi) सब्जियों तथा फलों को धोने में उपयोग किए गए जल को फूलों तथा सजावटी पौधों के गमलों को सींचने में किया जा सकता है।

(vii) पानी की बोतल में अंतत: बचे हुए जल को फेंकें नहीं अपितु इसका पौधों को सींचने में उपयोग करें।

(छ) अगर हम कुछ दिन के लिए किसी ऐसे स्थान पर गए हैं जहाँ स्वच्छ पानी का अभाव है। ऐसी स्थिति में वहाँ के लोगों को वर्षाजल संरक्षण की विधि को बताकर जागरूक बना सकते हैं।

❐ व्याकरण-बोध

4. जनसंख्या	जल
मनुष्य	धरती
5. योजनाएँ	पहाड़ियाँ
अवस्थाएँ	बावड़ियाँ

6. असफलता, गैरकानूनी, निर्बलता,
बेचैनी, अपमानित, सुव्यवस्थित

❒ योग्यता-विस्तार

7. विद्यार्थी स्वयं करें।
8. विद्यार्थी स्वयं करें।
9. विद्यार्थी स्वयं करें।
10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

11. विद्यार्थी स्वयं करें।
12. विद्यार्थी स्वयं करें।
13. विद्यार्थी स्वयं करें। ❑

7. जीवन का लक्ष्य

❒ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (ii)
2. (क) यात्री को कहीं जाने के लिए सर्वप्रथम अपनी मंजिल (गंतव्य) का चुनाव करना होगा।
(ख) कोई भी कदम उठाने से पहले यह विचार अवश्य करना चाहिए कि आखिर हम चाहते क्या हैं? हमारा लक्ष्य क्या है?
(ग) लक्ष्य का निर्धारण रुचि के अनुकूल होना चाहिए।
3. (क) **भाव**—इस पंक्ति के माध्यम से लेखक का तात्पर्य है कि यदि मन लगाकर किसी कार्य को किया जाए तो कोई भी कार्य असंभव नहीं है।
(ख) **भाव**—इस पंक्ति के माध्यम से लेखक यह बताना चाहता है कि जो व्यक्ति महान होते हैं उनके अच्छे आचरणों की झलक उनके निर्मल स्वभाव में साफ नजर आती है।
(ग) **भाव**—प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से लेखक के कहने का तात्पर्य यह है कि यदि कोई भी व्यक्ति अपनी रुचि के अनुकूल अपना एक लक्ष्य निर्धारित कर ले और उस लक्ष्य को पाने के लिए अपनी सम्पूर्ण शक्तियों को झोंक दे यानी पूरी लगन से परिश्रम करे तो एक दिन वह अवश्य सफल हो जाएगा। इस सफलता के द्वारा उसके सम्पूर्ण उद्देश्य पूरे हो जाएँगे।
4. (क) सफलता प्राप्त करने पर साधारणतया लोगों के तन-मन में प्रसन्नता का संचार हो जाता है।

(ख) 'जब तक लक्ष्य साधा नहीं जाएगा, उसे पाना दूभर है।' जिस तरह से स्टेशन पर खड़ा यात्री विभिन्न दिशाओं की ओर जाती हुई गाड़ियों को देखता है, परंतु जब तक वह अपनी मंजिल का चुनाव नहीं करेगा तब तक उसका अपने गंतव्य तक पहुँचना मुश्किल है।

(ग) अपनी रुचि के अनुसार, अपने भीतर के व्यक्ति या प्रतिभा को पहचाना जा सकता है।

(घ) अपने जीवन का लक्ष्य, मानवता को आधार बनाकर चुनने वाले व्यक्तियों को महान माना जाता है, क्योंकि ऐसे व्यक्ति दृढ़निश्चिय और आत्मविश्वास से भर जाते हैं और दूसरों के प्रेरणास्रोत बन जाते हैं।

(ङ) लक्ष्य निर्धारित करते समय हमें अपनी योग्यताओं पर विचार कर लेना चाहिए।

❒ व्याकरण-बोध

5.

क्ष	— लक्ष्मी,	क्षमता,	शिक्षक।
त्र	— पत्र,	त्रिदेव,	त्रिफला।
ज्ञ	— ज्ञेय,	सर्वज्ञ,	संज्ञा।
श्र	— श्रद्धा,	विश्राम,	आश्रय।

6. सफलता, उदारता, महानता, कायरता, सुंदरता, योग्यता, मूढ़ता, मलिनता।

7.

विशेषण	क्रियाविशेषण	विशेषण	क्रियाविशेषण
बहुत	धीरे-धीरे	तीसरी	—
बूढ़ा	—	असंख्य	—
कमजोर	अचानक		

8. **तत्सम शब्द** — यश, यमुना, स्रोत, चरित्र

तद्भव शब्द — चाँद, सच, काम, निखार

9. (क) कि; (ख) की; (ग) की; (घ) की, की;

❒ योग्यता-विस्तार

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

12. विद्यार्थी स्वयं करें।

13. विद्यार्थी स्वयं करें। ❑

8. धरती का सुरक्षा-कवच

❒ पाठ-शोध

1. (क) (ii)   (ख) (iii)   (ग) (iii)

2. (क) सी० एफ० सी०, (ख) पराबैंगनी, (ग) रजाई, (घ) विटामिन 'डी', (ङ) सुरक्षा-कवच

3. (क) पल्लवी को अखबार में ओजोन परत के बारे में पढ़ने के कारण ओजोन की याद आ गई होगी।

(ख) वायुमंडल में मुख्य रूप से दो गैसें होती हैं—नाइट्रोजन और ऑक्सीजन। इनमें से नाइट्रोजन करीब 78 प्रतिशत और ऑक्सीजन 21 प्रतिशत होती है।

(ग) यह हमारी पृथ्वी से ऊपर करीब 15 से 40 किलोमीटर की ऊँचाई की परत पाई जाती है। वायुमंडल की यह परत 'समतापमण्डल' या अंग्रेजी में 'स्ट्रेटोस्फियर' कहलाती है।

(घ) ओजोन की परत को सुरक्षा-कवच इसलिए कहते हैं, क्योंकि यह तेज पराबैंगनी किरणों को ऊपर ही रोक लेती है जो हमारे लिए नुकसानदायक होती हैं।

(ङ) तेज पराबैंगनी किरणें अगर सीधी धरती आ जाएँ तो जीव-जन्तु तड़पकर मर जाएँगे और पेड़-पौधे सूख जाएँगे। उनसे धरती पर जीवन नष्ट हो जाएगा।

(च) सी० एफ० सी० रसायन मनुष्य की ही देन है जिसने अपनी सुख-सुविधाओं के लिए ऐसे रसायनों की खोज की है।

(छ) खेतों में जो रासायनिक उर्वरक डालते हैं उनसे निकलने वाली नाइट्रोजन ऑक्साइड और हवाई जहाजों से निकलने वाली गैसों का धुआँ ऊपर उठकर सीधे ओजोन की परते में पहुँचते हैं। वहाँ परा बैंगनी किरणें इन्हें तोड़कर क्लोरीन के परमाणु बनाती हैं और क्लोरीन के परमाणु 'ओजोन' के दुश्मन हैं। वे ओजोन को तोड़कर ऑक्सीजन में बदलते रहते हैं। क्लोरीन का एक परमाणु ओजोन के 1,00,000 अणुओं को तोड़ सकता है। इस तरह ओजोन की परत कमजोर पड़ती जाती है।

(ज) पल्लवी सामने होती तो दादाजी को वायुमंडल के बारे में यह बताती कि क्या दादाजी, मैं इतना भी नहीं जानती कि पृथ्वी के चारों ओर रजाई की तरह वायुमंडल की परत लिपटी है। उसी में तो हम साँस लेते हैं।

❒ व्याकरण-बोध

4. जीव-जन्तु   सुख-सुविधाएँ
पढ़ना-लिखना   घर-बाहर

6. (क) संयुक्त वाक्य   (ख) सरल वाक्य   (ग) मिश्रित वाक्य
(घ) मिश्रित वाक्य   (ङ) सरल वाक्य   (च) मिश्रित वाक्य

7. **पुल्लिंग** | **स्त्रीलिंग**

पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**
प्रकाश	किरण
कवच	परत
वायुमंडल	पृथ्वी
अनुमान	चीज

8. पाँच, आँख, संकट, ऊँचाई, अंश
पेंसिल, लूँगा, साँस, चंचल, मुँह, अंग्रेजी

❐ योग्यता-विस्तार

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

11. विद्यार्थी स्वयं करें। ❐

9. बढ़े चलो, बढ़े चलो

❐ पाठ-शोध

1. (क) (iii) (ख) (ii) (ग) (ii)

2. **भाव**—इन पंक्तियों के माध्यम से कवि हमें लक्ष्य को पाने के लिए राह में आने वाली अनेकानेक मुसीबतों का साहस के साथ सामना करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए कहता है कि क्यों न तुम्हारी मंजिल की राह में मुसीबतों के बादल मँडरा रहे हों, चाहे इसके लिए तुम्हें विपत्तियों भरे जहर के घूँट पीने पड़े; किन्तु उन्हें भी अमृत समझकर पीते जाओ; पर अपने कामयाबी के मार्ग से विचलित मत होओ। अपने जीवन लक्ष्य की ओर निरंतर बढ़ते जाओ।

3. (क) कवि देश के नवजवानों को आगे बढ़ने के लिए कह रहा है।

(ख) इस कविता के लिए दूसरा शीर्षक होगा—'नव जागरण'।

(ग) यह कविता देश-भक्ति की भावना से ओत-प्रोत है।

(घ) 'बढ़े चलो' का अर्थ है—उन्नति करो। कवि प्रगति के मार्ग में बढ़ने के लिए कह रहा है।

(ङ) कवि ने मंजिल की ओर बढ़ने वाले व्यक्ति के रास्ते में आने वाली जिन कठिनाइयों का वर्णन किया है वे हैं—अन्न, नीर, वस्त्र तथा अस्त्र-शस्त्ररहित जीवन; बड़े-बड़े बर्फ के फिसलन भरे पहाड़; घिरी हुई घटाएँ तथा तपती हुई गरमी। इसके माध्यम से कवि यह संदेश देना चाहता है कि सफलता प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम की आवश्यकता होती है। यह भी सच है कि सफलता की ऊँचाइयों पर वही चढ़ सकता है जिसमें साहस हो। कठिनाइयाँ देखकर जो हिम्मत न हारे वही अपने लक्ष्य को प्राप्त करके नई मिसाल कायम करता है।

(च) जीवन की मूलभूत आवश्यकताएँ हैं—रोटी, कपड़ा और मकान।

(छ) लक्ष्य को पाने में धन के अभाव, कड़े परिश्रम, भोजन, वस्त्र तथा साधन-विहीनता जैसी आदि-आदि मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है।

❒ व्याकरण-बोध

4.

विशेषण	**विशेष्य**	**विशेषण**	**विशेष्य**
काली	घटा	जलती	मशाल
नीला	गगन	लाल	रक्त

5.

प्रण	— प्रतिज्ञा	संकल्प	दृढ़निश्चय
वस्त्र	— वसन	पट	चीर
राग	— प्रीति	अनुराग	रंजन
सुधा	— अमृत	अमिय	पीयूष
लहू	— रक्त	खून	रुधिर
अस्त्र	— हथियार	आयुध	शस्त्र

6. कमाल— यह दवा अभी अपना कमाल दिखाएगी

मिसाल — पिछले वर्षों में भारत और चीन का विकास मिसाल बन गया।

लहू — देश के जवान देश के लिए लहू बहाते हैं।

आग — चोर ने घर में आग लगाई।

❒ योग्यता-विस्तार

7. अस्त्र-शस्त्र-वस्त्र, शिखर-निखर-बिखर, अटूट-कालकूट-घूँट, आग-राग-फाग, मिशाल-मशाल-कमाल, तोल-मोल-खोल

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

11. विद्यार्थी स्वयं करें। ❑

10. पतंग का अनुशासन

❒ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (iv) (ग) (iv) (घ) (iii)

2. (क) पंतग की उड़ान तब सफल होती है जब प्रतिस्पर्धा में दूसरी पतंग के साथ उसके पेंच लड़ाए जाते हैं।

(ख) पेंच लड़ाने में हार-जीत की भावना देखने में आती है।

(ग) जीवन में अपना गम भुलाकर दूसरे के कामों में लग जाने की व्यवहारिकता होनी चाहिए।

(घ)

शब्द	**अर्थ**
प्रतियोगिता	प्रतिस्पर्धा
दृढ़निश्चय	संकल्प

3. (क) **भाव**—प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से लेखक यह कहना चाहता है कि प्रत्येक मनुष्य के जीवन में ऐसे अनेक पड़ाव आते हैं जो उसे रुकने के लिए मजबूर करते हैं, किंतु अगर वह इनके चक्कर में पड़ता है तो अपनी मंजिल से दूर होता है। इसलिए कहा गया है कि उठो जागो और लक्ष्य तक पहुँचने से पहले रुको मत।

(ख) **भाव**—प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से लेखक हमें व्यावहारिक जीवन को सफल बनाने का संदेश देते हुए कहता है कि जिस प्रकार से पतंग उड़ाने में अच्छे माँजे का प्रयोग किया जाता है जिससे उस धागे में पेंच लड़ाए जा सकें ठीक उसी प्रकार जीवन में भी अच्छे और कुशल व्यक्तियों का चुनाव किया जाता है जिससे वह हमारे भले और बुरे वक्त में हमारा साथ दे सकें।

4. (क) कुछ लोगों को अनुशासन एक बंधन इसलिए लगता है, क्योंकि वे उसकी वास्तविकता से अनभिज्ञ होते

(ख) नौकरी और पारिवारिक जीवन के बीच लापरवाही जिंदगी की पतंग को असंतुलित कर देती है यानि पारिवारिक जीवन अव्यवस्थित हो जाता है।

(ग) लेखक के अनुसार, अपना गम भूलकर दूसरों की खुशियों में शामिल होना और एक नए संकल्प के साथ जीवन की राहों पर चलना इन्सानियत है।

(घ) एक डोर से बँधी पतंग हमें अनुशासन सिखाती है।

(ङ) अनुशासन के बारे में लेखक को यह बात सच लगती है कि यह एक मुक्त व्यवस्था है, जो जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए अति आवश्यक है।

(च) जीवन में मोहरूपी अवरोध के आने पर सही इंसान यह करता है कि वह इस मोह के पड़ाव पर नहीं ठहरता, बल्कि वह सदैव मंजिल की ओर बढ़ता जाता है।

(छ) परिस्थितियों के अनुसार, ढलने वाला व्यक्ति ही सफलता का परचम लहराता है। वह ऐसे कि मनुष्य यदि अपने हालातों को देखकर उनके अनुकूल स्वयं को ढाल लेता है तो परिस्थितियाँ उसके आड़े नहीं आतीं और वह एक-न-एक दिन सफल अवश्य हो जाता है।

❒ व्याकरण-बोध

5. (क) अवलंब — हे प्रभु! आप मेरे एकमात्र अवलंब हैं; मेरी रक्षा कीजिए।
अविलंब — गोपियाँ श्रीकृष्ण को अविलंब आने का संदेश भेजती हैं।

(ख) असमान — दो असमान विचारों वाले व्यक्तियों से दोस्ती होना बड़ी अचरज की बात है।

आसमान — आसमान में बादल छाए हुए हैं।

(ग) ओर — हिमालय उत्तर दिशा की ओर स्थित है।

और — गंगा और यमुना भारत की दो पवित्र नदियाँ हैं।

(घ) परिणाम — यदि प्रयत्न अच्छा है तो परिणाम भी अच्छा होगा।

परिमाण — वस्तु की लम्बाई-चौड़ाई ही उसका परिमाण है।

6. व्यक्तिवाचक — पतंग, कन्ना, पेंच, मोती।

जातिवाचक — आकाश, डोर, लोग, माँ, पुत्र, बच्चा, बूढ़ा, युवा, जमीन, मानव, जीवन।

भाववाचक — अनुशासन, बन्धन, संतुलन, नियंत्रण, समन्वय, लापरवाही, जोश, लक्ष्य, प्रलोभन।

7. इच्छा — चाह, कामना

भावना — कल्पना, खयाल

संकल्प — विचार, प्रयोजन

लक्ष्य — मंजिल, गंतव्य

खुशी — प्रसन्न, सुख

हवा — वायु, पवन

8.

निर्बल	अव्यावहारिक
अविश्वास	अनियंत्रण
अनुपयोगी	अनिश्चय
असंतुलन	अनुशासित

❒ योग्यता-विस्तार

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

12. विद्यार्थी स्वयं करें।

❑

11. राजा और प्रजा

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (i) (ग) (iii)

2. (क) भाव—इस पंक्ति का भाव यह है कि सारी चीजें चाहे वह जमीन की हों या आसमान की सब पर मनुष्य का अधिकार है, इतना वह शक्तिशाली है किंतु वही मनुष्य पानी जैसे तत्त्व के अभाव में इतना लाचार हो जाता है कि सर्वस्व समर्पित करने के लिए मजबूर हो जाता है अर्थात् इतना कमजोर भी है।

(ख) भाव—इस पंक्ति का भाव यह है कि मनुष्य कभी धन से छोटा या बड़ा नहीं होता, बल्कि उसे उसके कर्म छोटा या बड़ा बनाते हैं। अत: पुरस्कार न लेकर उस ग्रामीण युवक ने राजा के हृदय को ही जीत लिया था।

(ग) भाव—इस पंक्ति का भाव यह है कि युवक की स्पष्टवादिता और उसके महान वचनों को सुनकर राजा निररुत्तर हो गया और तब राजा ने संपूर्ण निर्णय उसी के ऊपर छोड़ दिया।

3. (क) जंगल में शिकार करने वाले लोग राजा और उसके राजकर्मचारी थे।

(ख) राजा यदि देहाती को न पहचानता तो हो सकता है कि उसकी बात की सुनवाई न की जाती और चंदनपुर की समस्या का कोई हल न निकलता।

(ग) देहाती ने अशरफी लेने से इंकार इसलिए किया, क्योंकि उसने प्यासे को पानी पिलाना अपना कर्त्तव्य और ईश्वर की बनाई हुई चीज में सबका समान अधिकार समझा।

(घ) चंदनपुर के लोग राजा के पास फरियाद लेकर गए।

(ङ) 'ईश्वर की बनाई और दी हुई वस्तु का मूल्य मैं कैसे ले सकता हूँ।' देहाती ने ऐसा इसलिए कहा, क्योंकि ईश्वर की बनाई हुई चीजों पर सबका बराबर का अधिकार है।

(च) (i) अगर देहाती युवक ने पानी के बदले अशरफी ले ली होती तो राजा को अपने कर्त्तव्य का बोध न होता।

(ii) अगर महाराज युवक के तर्कों से क्रोधित हो जाते तो कहानी यह मोड़ लेती कि युवक की बात न सुनी जाती और उसे दरबार से बाहर किया जाता जिससे प्रजा का अपने राजा से विश्वास उठ जाता।

❒ व्याकरण-बोध

4. (क) (iii) (ख) (ii) (ग) (i) (घ) (iv) (ङ) (i)

5. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (ii) (घ) (ii) (ङ) (iii)

6. महान	कमजोर
अतिवृष्टि	शहरी
अतप्त	शीत
7. निर् + उत्तर	अ + सह्य
प्रति + निधि	दुर् + दशा
अति + रिक्त	सु + शोभित
8. घोटक	काँध
पिपासा	सायम्
ग्राम	पंच

9. (क) दोनाली (संख्यावाचक विशेषण)

(ख) घोर (गुणवाचक विशेषण)

(ग) बढ़िया (गुणवाचक विशेषण)

(घ) पाँच वर्ष पहले (संख्यावाचक विशेषण)

(ङ) रेशमी (गुणवाचक विशेषण)

❐ योग्यता-विस्तार

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

12. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

13. विद्यार्थी स्वयं करें।

14. विद्यार्थी स्वयं करें। ❑

12. ठेले पर हिमालय

❐ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (ii) (घ) (iii)

2. (क) ठेले पर बर्फ से लदी सिलें और उन पर उठती भाप को देखकर लेखक को हिमालय का स्मरण हो आया; तभी उनके मन में 'ठेले पर हिमालय' शीर्षक सूझा।

(ख) हिमालय की बर्फ को बहुत निकट से देख पाने के लिए लेखक कौसानी गए थे।

(ग) कौसानी सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में ऊँची पर्वतमाला के शिखर पर बसा हुआ है। उसकी विशेषता यह है कि वह एक छोटा-सा उजड़ा-सा गाँव है, जहाँ बर्फ का बिल्कुल भी नामोनिशान नहीं है और अगल-बगल बड़ी ढलानें हैं।

(घ) पर्वतों की रंग-बिरंगी छटाओं, हरे-भरे मखमली कालीनों जैसे खेतों तथा बेलों की लड़ियों के समान नदियों तथा हिमालय की सुकुमार, सुन्दर और पवित्र धरती को देखकर लेखक को लगा कि वह किसी दूसरे ही लोक में चले आए हैं।

(ङ) सबसे पहले बर्फ दिखाई देने का वर्णन लेखक ने इस तरह किया कि छोटा-सा बादल के टुकड़े के समान एक अजब रंग का; न रुपहला, न हल्का नीला, न सफेद.... अर्थात् तीनों का आभास कराने वाला वह पर्वतसम्राट हिमालय है जिसका छोटा-सा बाल स्वभाव वाला शिखर मानो बादलों की खिड़की से झाँक रहा हो।

(च) सूरज डूबने पर सब गुमसुम इसलिए हो गए, क्योंकि वह मनोरम दृश्य जो पहले दिखाई पड़ रहा था, धीरे-धीरे आँखों से ओझल होता गया और अँधेरा होने के साथ अदृश्य हो गया।

(छ) (i) 'वह रास्ता' से कौसानी से कोसी पहुँचने के रास्ते की ओर संकेत है।

(ii) एक तो, पर्वतीय क्षेत्र तथा दूसरे पानी का अभाव होने के कारण रास्ता कष्टप्रद, सूखा और कुरूप लगा।

(ज) (i) लेखक ने वहाँ की सुंदरता का जो बखान सुन रखा था, जिसके दर्शन के लिए उसने इतने कष्ट सहे थे, वह सब न दिखाई पड़ने के कारण उन्होंने कहा कि लगा जैसे ठगे गए हम लोग।

(ii) पर्वतमालाओं में बिखरे अपार सौन्दर्य को तथा उनके बीच बेलों की तरह आपस में उलझी हुई नदियों को देखकर लेखक ने कहा कि इन लड़ियों को उठाकर कलाई में लपेट लूँ। आँखों से लगा लूँ।

❒ व्याकरण-बोध

3. मूर्ति-सा   लड़ियों-सी   टुकड़े-सा

4. (क) (i)   (ख) (i)   (ग) (i)   (घ) (iv)   (ङ) (i)

5. (क) (i)   (ख) (ii)   (ग) (ii)   (घ) (ii)   (ङ) (iv)

6. (क) नाम और निशान   (ख) हरी और भरी

(ग) दाल और रोटी   (घ) आगे और पीछे

(ख)

समास-विग्रह	**समास-विग्रह**
सूखे और भूरे	शिव और पार्वती
चाय या कॉफी	स्कूटर अथवा कार
पेन और पेंसिल	छोटे या बड़े
नदी और नालों	मुँह और हाथ

❐ योग्यता-विस्तार

7. विद्यार्थी स्वयं करें।

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें। ❑

13. भक्ति-पद

❐ पाठ-बोध

1. (क) (iii) (ख) (iii) (ग) (i)

2. (क) इस पद्यांश के रचनाकार कबीरदास जी हैं।

(ख) यहाँ पर 'मैं' शब्द का प्रयोग ईश्वर के लिए तथा 'तेरे' शब्द का प्रयोग भक्त के लिए हुआ है।

(ग) ईश्वर 'मंदिर' और 'मस्जिद' में नहीं मिलेगा।

(घ) 'क्रिया करम' का आशय है—कर्मकांड तथा 'योग बैराग' का आशय है—जप-तप करना।

3. (क) **भावार्थ**—मीरा जी श्रीकृष्ण की अनन्य उपासिका हैं। उन्होंने अपने इष्टदेव की भक्ति को सच्ची नाव की उपमा दी है जिसे खेने वाले उनके सच्चे गुरु हैं, जिन्होंने इस भवसागर से उन्हें पार करने का संकल्प लिया है। मुझे किसी भी बल की परवाह नहीं है। मीरा जी कहती हैं कि मेरे तो प्रभु श्री गिरधर जी हैं, मैं तो खुशी-खुशी उनके यश का गान करती हूँ।

(ख) **भावार्थ**—सूरदास जी के अनुसार, जिस भौंरे ने, कमल के मकरंद (रस) का स्वाद चख लिया है वह भला करील के कसैले फल को क्यों पसंद करेगा? इसी प्रकार जिसे एक बार भगवत्-प्रेम का अमृतरूपी रस चखने का अवसर प्राप्त हो गया हो, वह सांसारिक विषय-वासनाओं की पंक (कीचड़) में फँसने का प्रयास कभी नहीं करेगा।

जिसे कामधेनु के समान समस्त इच्छाओं की पूर्ति कर देने वाली गाय मिल गई हो, वह बकरी को दुहकर उसके दूध से अपने को क्यों सन्तुष्ट करना चाहेगा। तात्पर्य यह है कि जिसने भगवद्-प्रेमरूपी अमृत का आस्वादन कर लिया हो, वह सांसारिक विषय-वासनाओं से संतुष्टि प्राप्त करने को व्यर्थ समझता है।

(ग) **भावार्थ**—कबीरदास जी निर्गुण ब्रह्म के उपासक हैं। उन्होंने प्रभु के मिलने का स्थान मंदिर या मस्जिद नहीं बताया है। उन्होंने बताया है कि जो व्यक्ति सच्चे हृदय से प्रभु को खोजता है, तो वे उसे पलभर की भक्ति में ही मिल जाते हैं। कबीरदास जी साधु-संतों से कहते हैं कि उसे ढूँढ़ने के लिए कहीं भी भटकने की जरूरत नहीं है। वे हर प्राणी में विराजमान हैं।

(घ) **भावार्थ**—अब तक तो मेरी करनी बिगड़ चुकी, पर अब आगे से सँभल जाऊँगा। अब तक तो मैंने अपने जीवन को नष्ट कर लिया, परंतु अब नष्ट नहीं करूँगा, मैं सँभल गया हूँ। रघुनाथ जी की कृपा से संसाररूपी रात्रि बीत चुकी है अर्थात् सांसारिक प्रवृत्तियाँ दूर हो रही हैं। अब जागने पर (विरक्ति उत्पन्न होने पर) फिर कभी बिछौना न बिछाऊँगा अर्थात् सोने की तैयारी न करूँगा, सांसारिक मोह-माया में न फँसूँगा।

4. (क) मीरा के धन की यह विशेषता है कि वह खर्च करने पर घटना नहीं है, न ही चोर उसे लूट सकते हैं तथा दिन-प्रतिदिन उसकी वृद्धि होती है।

(ख) सूरदास ने अपने उपास्य देव श्रीकृष्ण की तुलना जहाज, गंगा, कमल तथा कामधेनु से की है।

(ग) सूरदास किसी अन्य देव की उपासना इसलिए नहीं करना चाहते, क्योंकि अन्य देव उनके देव (श्रीकृष्ण) की बराबरी नहीं कर सकते।

(घ) जहाज के पंछी की यह विशेषता है कि वह जहाज से उड़कर समुद्र में ठिकाने की तलाश करता हुआ चक्कर लगाता है, परन्तु कहीं पर आश्रय न पाने पर वह पुन: उसी जहाज में आता है। कवि ने अपने मन को जहाज का पंछी इसलिए कहा है कि पंछी की तरह ही मन को भी श्रीकृष्ण की भक्ति के सिवा कहीं और सुकून नहीं मिलता।

(ङ) कबीर के अनुसार, ईश्वर हर प्राणी में है।

(च) तुलसीदास जी ने सांसारिक विषय-भोगों को छोड़कर श्री रघुबीर जी के चरण-कमलों की वंदना करने की प्रतिज्ञा की है।

(छ) कबीरदास जी ने हिंदू और मुस्लिम दोनों के ही भक्ति करने के तरीकों का खण्डन किया है और समाज कल्याण की भावनाओं को उजागर करने का पूर्ण प्रयास किया है इसलिए हम कह सकते है कि वे एक समाज-सुधारक थे।

❒ व्याकरण-बोध

5. रूपक अलंकार

6.

राजस्थानी भाषा	;	ब्रज भाषा
सधुक्कड़ी भाषा	;	ब्रज भाषा

❒ योग्यता-विस्तार

7. विद्यार्थी स्वयं करें।

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

11. विद्यार्थी स्वयं करें। ❑

14. बहादुर बेटा

❐ पाठ-बोध

1. (क) (i) (ख) (iv)

2. (क) कुलदीप ने घर आकर बाढ़ और तूफान के द्वारा लोगों के मुसीबत में पड़ने की सूचना दी।

(ख) रेडक्रॉस एक राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संस्था है जिसका प्रमुख कार्य पीड़ितों (घायलों) की मदद करना है।

(ग) कुलदीप को बड़े भाई से यह शिकायत थी कि वे ही हर काम में आगे रहते हैं।

(घ) बाढ़ की सूचना सुनने के बाद पीड़ितों की मदद करने के लिए माँ से जो कुछ हो सकता था वह करने के लिए तैयार हो गयीं।

(ङ) मधुर ने बाढ़-पीड़ितों की सहायता के लिए माँ को यह सलाह दी कि चलो, हम दोनों घर-घर से अनाज और धन इकट्ठा करें।

❐ व्याकरण-बोध

3. (क) अच्छा, अच्छा पहले तू रोटी तो खा ले।

(ख) मंच पर एक साधारण-से घर का कमरा।

(ग) कल तक यहाँ भी बुरी हालत होने वाली है।

4. (क) संयुक्त (ख) संयुक्त (ग) मिश्रित (घ) मिश्रित

(ङ) सरल।

5.

	उद्देश्य	विधेय
(क)	दूसरे लोगों ने	उन्हें शीघ्रता से बचा लिया।
(ख)	हम सब लोग	बाढ़-पीड़ितों की सहायता के लिए गए हुए थे।
(ग)	मैं	रेडक्रॉस की सदस्या हूँ।
(घ)	आपके पुत्र संदीप जी ने	वहाँ बहुत काम किया।

6. (क) कब तक दूर होंगी ये **परेशानियाँ**।

(ख) मैं जाता हूँ, स्कूल में **स्वयंसेवकों** की जरूरत है।

(ग) **नदियों** में बाढ़ आ गई।

(घ) सुना तो **हमने** भी है कि जोर की बाढ़ आई है।

(ङ) पर इतना नुकसान हो गया यह **उसने** नहीं बताया था।

7. पुत्री | युवती
औरत | मास्टरनी
भाभी | स्वयंसेविका

❐ योग्यता-विस्तार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

10. विद्यार्थी स्वयं करें। ❑

15. सुनयना की डायरी

❐ पाठ-शोध

1. (क) (i) (ख) (ii) (ग) (iv)

2. (क) सुनयना के घर सीमा अपनी मम्मी के साथ आई थी।

(ख) दादाजी अपना अधिक समय तहखाने में गुजारते थे।

(ग) सुनयना को बिल्ली खून से लथपथ होने के कारण बदसूरत लग रही थी।

3. (क) सुनयना अपने सामान को साफ-सुथरा और सुंदर रखती थी।

(ख) सुनयना का स्वभाव हर अच्छी यानी सुन्दर चीज को प्यार करने तथा असुन्दर चीज से नफरत करने वाला था।

(ग) दादाजी बिल्ली को लेकर तहखाने में इसलिए चले गए, क्योंकि वे अपना अधिकांश समय तहखाने में ही गुजारते थे। वे वहाँ उसकी ठीक से देख-रेख कर सकते थे।

(घ) दादाजी के समझाने पर कि हमें किसी से नफरत नहीं करनी चाहिए; इस बात से प्रभावित हो जाने के कारण सुनयना और कैटी के बीच दोस्ती हुई।

(ङ) दादाजी ने बीमार बिल्ली के खान-पान और समय से उसकी मरहम-पट्टी करके उसे ठीक किया।

(च) दादाजी ने सुनयना को समझाया कि हमें किसी से नफरत नहीं करनी चाहिए। इस संसार में सब-कुछ भगवान द्वारा बनाया गया है। यदि हम बाहरी दिखावे को देखेंगे तो आन्तरिक सुन्दरता कभी नहीं देख पाएँगे।

(छ) अंत में सुनयना को सारी दुनिया सुंदर लगने लगी।

❒ व्याकरण-बोध

4. सोमेश	नरेन्द्र
राजर्षि	जलोर्मि
नरोचित	चन्द्रोदय
5. बगीचा — पुल्लिंग	दशा — स्त्रीलिंग
तस्वीर — स्त्रीलिंग	पट्टी — स्त्रीलिंग
6. संदेहसूचक/सम्बोधन,	पूर्ण विराम, उद्धरण चिह्न
अल्प विराम,	प्रश्नसूचक, अर्धविराम
7. गर्मी	दुर्घटना
गर्दन	मित्र
आश्चर्य	दुर्गति
घृणा	बर्ताव
8. खुशबू	सद्गति
बेचैन	प्यार
खूबसूरत	बाह्य

❒ योग्यता-विस्तार

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

12. विद्यार्थी स्वयं करें।

13. विद्यार्थी स्वयं करें।

14. विद्यार्थी स्वयं करें। ❏

16. गगन का चाँद

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iii) (ख) (iv) (ग) (iv)

2. (क) इस पंक्ति में कवि के न बोलने की बात कही गई है।

(ख) रागिनी चाँद के प्रश्नों के उत्तर दे रही है।

(ग) कवि की रागिनी के स्वप्न बुलबुले हैं।

3. **भाव**—प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि की रागिनी कहती है कि सिर्फ स्वप्न देखना ही मेरा काम नहीं है बल्कि उसको सोने की तरह आग में तपाकर उसमें मजबूती प्रदान करती हूँ और उस पर अपने मजबूत इरादों की नींव रखकर उसे साकार रूप प्रदान करती हूँ।

4. (क) स्वप्न को क्षणिक होने के कारण बुलबुले के समान बताया गया है।

(ख) इस कविता में चाँद ने कवि को अनोखा जीव इसलिए कहा है क्योंकि सारी समस्याओं का ताना-बाना बुनने वाला आदमी ही है जो अपनी ही बनाई हुई समस्याओं में उलझा रहता है।

(ग) कवि की रागिनी ने अपना परिचय एक कर्त्तव्यनिष्ठ और मजबूत इरादों वाले व्यक्ति के रूप में देते हुए चाँद को यह बताया है कि स्वप्नों को साकार करने वाला आदमी ही है।

(घ) चाँद अपने पुराने होने की बात मनुष्य के पूर्वजों के जन्म लेने और कई बार संहार होने को स्वयं को साक्षी बताकर सिद्ध करता है।

(ङ) 'कल्पना की जीभ में भी धार होती है' पंक्ति का आशय यह है कि व्यक्ति अपने सशक्त और फौलादी इरादों के बल पर ही सम्पूर्ण जीत हासिल करता है।

(च) इस कविता के द्वारा कवि हमें यह संदेश देना चाह रहा है कि हममें वह सब करने की क्षमता है जो हम सोच सकते हैं। बस इसके लिए हमें अपने इरादों को मजबूती प्रदान करने की जरूरत है।

(छ) विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ व्याकरण-बोध

5. अंबर — वस्त्र, आकाश   उत्तर — दिशा, जवाब

लाख — सौ हजार की संख्या, एक पदार्थ (चूड़ी/कंगन बनाने का)

पूर्व — एक दिशा, पहले का

6.

बेचैन	दुखी
फौलादी	दानी

7.

हाथ	— कर, पाणि	चाँद	— मयंक, रजनीश
गगन	— व्योम, नभ	आदमी	— मनुज, इंसान
जल	— सलिल, नीर	घर	— गृह, निकेतन

❐ योग्यता-विस्तार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।
9. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

10. विद्यार्थी स्वयं करें।
11. विद्यार्थी स्वयं करें। ❐